International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-1 February- 2015 P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

आचार्य श्री रजनीश के महिला शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन

वन्दना पाण्डे
शोधार्थी
जे0 जे0 टी0 विश्वविद्यालय राजस्थान

सार
भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। जिसे हमारे ऋषियों एवं मुनियों ने प्रत्येक युग में एक नयी दिशा प्रदान की है और उसे समय–समय पर सजाया और संवारा है। यद्यपि काल के प्रभाव से भिन्न–भिन्न व्यक्तियों ने इसे नष्ट करने की चेष्टा की है। लेकिन यह इतनी सबल रही है कि इस पर इन वाहय झंझावातों का कोई खास प्रभाव नहीं हुआ। हमारे देश पर सिकन्दर महान ने भी आक्रमण किया। लेकिन उसको भी यहॉ की धरती पर आकर मुंह की खानी पड़ी। वह हमारी संस्कृति से इतना प्रभावित हुआ कि इसके समझ नतमस्तक होकर लोट गया। इसी कड़ी में हमारे आधुनिक समाज को एक नई दिशा प्रदान करने का कार्य आचार्य श्री रजनीश ने किया। वर्तमान सार के माध्यम से शोधकर्त्ती ने यह प्रयास किया है कि वह आचार्य श्री रजनीश के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का सम्यक दृष्टि से अध्ययन करें।

प्रस्तावना
मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य एवं दुर्भाग्य एक ही बात में है, और वह यह कि मनुष्य को जन्म के साथ कोई सुनिश्चित स्वभाव नहीं मिला। पृथ्वी पर बाकी सब, पशु, पक्षी, पौधे–एक निश्चित स्वभाव लेकर पैदा होते हैं। लेकिन मनुष्य बिल्कुल तरल है। इसे कैसा भी ढाला जा सकता है। यह सौभाग्य है क्योंकि इसमें स्वतन्त्रता है विकास की स्वतन्त्रता। यह दुर्भाग्य भी है क्योंकि भूल–चूक की पूरी संभावना है। हम किसी कुत्ते को यह नहीं कह सकते कि तुम थोड़े कम कुत्ते हो। सब कुत्ते बराबर कुत्ते होते हैं। लेकिन मनुष्य को कहा जा सकता है कि तुम थोड़े कम मनुष्य मालूम पड़ते हो। मनुष्य को छोड़कर और कोई भूल नहीं सकता क्योंकि सबकी प्रकृति बंधी हुई है। उन्हें जो करना है वहीं करते हैं। मनुष्य को स्व्यं को निर्माण करना होता है, बाकी सारी जातियों, पशुओं की, पक्षियों की, निर्मित ही पैदा होती है। मनुष्य को खुद को विकसित करना होता है। इसलिये दुनिया में कई तरह की सभ्यताएं विकसित हुई। कई तरह की शिक्षाएं विकसित हुई जैसे–आदर्शवादी शिक्षा, प्रयोजनवादी शिक्षा आदि। शिक्षा क्या है ? आदमी को एक शक्ल विशेष में ढालने की प्रक्रिया ही शिक्षा है। शिक्षा, एक ढंग विशेष का मनुष्य निर्माण करने की प्रक्रियाएं हैं। हमारे देश में भी एक खास ढंग का आदमी पैदा करने की कोशिश हुई। हमारे यहॉ कोशिश यह हुई कि हम आदमी को परमात्मा की शक्ल में ढालेगे। हमने यह कोशिश की कि हम रहेंगे पृथ्वी पर, लेकिन सोचेगें स्वर्ग की। पृथ्वी की तरफ देखेंगे भी नहीं। चाहे वह कोई भी दार्शनिक परम्पराए रही हो। वैष्णव–शैव, साथ–योग, वैशेषिक न्याय, मीमांसा–वेदान्त, चाहे वह कोई भी शिक्षक रहाहो – बुद्ध महावीर, शंकर–रामानुज, तुलसी–सूर, कृष्णमूर्ति – अरविन्द – लक्ष्य मोक्ष रहा, निर्माण रहा केवल्य रहा – जीवन नहीं।
यह विचार करने की बात है कि हमारी शिक्षा सभ्यता ने अभी तक एक ढंग का वैज्ञानिक पैदा नहीं किया है। जिस देश के पास इतनी प्रतिक्रिया है वे बुद्ध, महावीर, कृष्ण, शंकर, नागार्जुन, अरविन्द इसमें एक भी आइसटीन पैदा नहीं हुआ। हजार आइस्टीन पैदा हो सकते थे अकेले बुद्ध व्यक्तित्व से। एक कृध की क्षमता हजार न्यूटन पैदा कर सकती थी। जरूर कही भूल हुई है और वे भूल वही हुई जिसका ऊपर जिक्र हुआ। हमने उन्हें एक ही धारा में कहने को मजबूर कर दिया। बस वह आत्मा की धारा में बहते चले गये। जीवन वास्तविकता की खोज में एक भी नहीं गया। हमारी शिक्षा की सबसे बड़ी भूल यही रही कि हमने भौतिक को इंकार किया, पदार्थ से इंकार किया। हमने कह दिया सब माया है। सब झूठ है। वह सब पदार्थ, पदार्थ का जगत असत्य है। सत्य तो कही और है जो दिखाई नही पड़ता।

महिला सम्बन्धी शिक्षा विचार
पेसिव का अर्थ है प्रतीक्षा कर सकती है – आक्रमक नही है आक्रमण नहीं करेगी, पहल नहीं करेगी – पुरुष आक्रमक है, एग्रेशन है। वह जायेगा पहल करेगा। स्त्री अनन्त प्रतीक्षा है – मौन प्रतीक्षा, आक्रामक नहीं अनाक्रमक।यह तथ्य तो सर्व विदित है कि स्त्रियों और पुरुषों के स्वभाव में अन्तर होता है। स्त्रियों के आचार व्यवहार पुरुषों से काफी अलग होते हैं। कुछ गुणों को तो स्त्रेण गुण भी कहा जाता है जैसे वात्सलय आदि। इसी तथ्य को वे एक घटना के माध्यम से स्पष्ट करते हैं–'मैं एक छोटे से स्टेशन पर रूका था मेरी गाड़ी आने में देर थी, वह एक छोटे से देहात का स्टेशन था और एक बूढ़ी स्त्री को कुछ लोग ले जा रहे थे। उसके सिर पर पट्टियां बंधी थी। शायद किसी ने उसे लकड़ी से चोट पहुंचाई थी। दो तीन स्त्रियां भी उसके साथ थी। वे बाहर बड़े नगर में उसे अस्पताल ले जा रहे थे। मैंने पूछा इस स्त्री को किसने मार दिया ? उसके साथ की स्त्रियों ने कहा कि इसका एक ही लड़का है

और उसी लड़के ने इसको लकड़ी से चोट पहुंचाई है। और इसके सिर को लहूलुहान कर दिया। यह बेहोश हो गई थी। अभी–अभी होश में आई है। हम इसे अस्पताल ले जा रहे है। दूसरी स्त्री जो उसी के साथ आयी थी कहा कि ऐसे लड़के तो पैदा ही न तो तो अच्छा है। लेकिन उस बूढ़ी स्त्री ने जिसके सिर से खून बह रहा था उस दूसरी स्त्री के मुंह पर हाथ रख दिया और कहा ऐसा मत कहो अगर लड़का न होता तो आज मुझे मारता भी कौन। लड़का है तो उसने मार भी दिया। लेकिन लड़का नहीं होता तो मुझे मारता भी कौन ? लड़के का होना ही बहुत है। उसने मारा यह तो बहुत छोटी बात है और फिर वह बूढ़ी हंसने लगी – लड़का ही है अभी समझ कितनी है। मार दिया, कल समझ वापिस आ जायेगी।

''यह एक मां का हृदय है जो गणित में नहीं सोचता जो कानून में नहीं सोचता, जो किसी प्रेम और आशा में सोचता है।''
ऐसा नहीं कि ये वात्सल्य के गुण पुरुषों में नहीं होते, होते तो है लेकिन स्त्रियों की अपेक्षा कम होते हैं। किन्हीं पुरुषों में ये अधिक भी हो सकते हैं। लेकिन जन्मजात एवं स्वभाविक रूप से ये स्त्रियों के ही गुण है। नीत्सें ने आज से कुछ ही पहले यह घोषणा की, कि बुद्ध और क्राइस्ट स्त्रैण रहे होंगे क्योंकि उन्होंने करूणा और प्रेम की इतनी बाते की है ये बाते पुरुषों के गुण नहीं है।
इस बात को समझाते हुए आचार्य श्री कहते हैं, ''गॉधी जी के आश्रम में एक आदमी आना शुरू हुआ था। कुछ लोगों ने गॉधी जी से शिकायत की कि यह व्यक्ति अच्छा नहीं है। इस आदमी का चरित्र अच्छा नहीं है। इस व्यक्ति को आश्रम में आनरे देना उचित नहीं है। इस व्यक्ति के गलत जीवन के बारे में बहुत गलत खबरे आश्रम में सुनी जा चुकी है। गॉधी जी ने कहा अगर आश्रम में बुरे आदमी नहीं आ सकेगे तो आश्रम किसके लिये निर्मित किया गया है। बुरे आदमी आते हैं हम उनका स्वागत करेगें। लेकिन एक दिन तो बात बहुत आगे बढ़ गई कुछ लोगों ने आकर गॉधी जी को कहा अब तो सीमा से बाहर बात चली गयी। जिस व्यक्ति को हम रोकने को कहते थे। वह आज शराब घर में बैठा पी रहा है। हम ऑखों से देखकर आये है और आप भी चलकर देख सकते हैं। खादी पहने हुए वह आदमी शराब खाने में बैठा हो तो बड़ा अपमानजनक है यह आश्रम के लिये। गॉधी जी की ऑखों में खुशी के आंसू आ गये और गॉधी जी ने कहा कि मैं उस आदमी को वहॉ शराबखाने में देखा तो हृदय आनन्द से भर जाता। इस लिये आनन्दित हो उठता कि अच्छे दिन मालूम होता है आने शुरू हो गये। शराब पीने वाले लोगों ने भी खादी पहननी शुरू कर दी।
यह जीवन को दो तरफ से देखना है। जिन मित्रों ने गांधी को आकर कहा था उनकी जीवन को देखने की जो दृष्टि है। वह अदालत की दृष्टि है। वह एक वकील की दृष्टि है। गॉधी जी ने जिस तरह से देखा वह एक मॉ की दृष्टि है वह एक स्त्री की दृष्टि है।''
गॉधी के पास बहुत लोगों को लगा कि उनके मन में मॉ जैसे बहुत कुछ गुण है। गॉधी जी के ऊपर तो एक स्त्री ने किताब भी लिखी है 'बापू माई मदर' गांधी मेरी मॉ। बुद्ध के पास जाकर लोगों को लगता था। क्राइस्ट के पास जाकर लोगों को लगता था कि शायद इन आदमियों के भीतर भी स्त्रियों की अद्‌भुत झमता है। ''जहॉ भी प्रेम है, जहॉ भी करूणा है, जहॉ भी दया है वहॉ स्त्री मौजूद है।''
ओशो स्त्रियों के स्वभाव के बारे में कहते है – जीवन में जो भी कोमल गुण है, जीवन के जो भी माधुर्य से भरे सौन्दर्य, शिव की कल्पना और भावना है वह स्त्री का अनिवार्य स्वभाव है। वही सब तथ्य एवं दृष्टान्त इस सर्वमान्य धारणा को आधार प्रदान करते हैं कि पुरुषा और स्त्रियों के व्यक्तित्व में भारी अन्तर होता है। पुरुष स्त्री ही क्यों, पुरुष–पुरुष और स्त्री–स्त्री के व्यक्तित्व में भी भारी अन्तर पाया जाता है और आधुनिक शिक्षा शास्त्री न केवल इस विभिन्नता को स्वीकार करते है बल्कि विभिन्नताओं के अनुसार ही अलग–अलग शिक्षा की व्यवस्था की बात भी करते है तो यह तथ्य प्रमाणित होता है कि स्त्रियों का व्यक्तित्व पुरुषों से बहुत भिन्न होता है। अब हम ओशो के नजरिये से इस प्रश्न का उत्तर तलाश करेंगे कि वर्तमान शिक्षा स्त्रियों के व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं है तो क्यों ? तथा साथ ही यह भी कि स्त्री शिक्षा की विषय वस्तु क्या हो ? ओशो वर्तमान शिक्षा को स्त्रियों के व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं मानते क्योंकि वर्तमान शिक्षा एक पक्षीय है, एंकागी है।'' आज हम महिलाओं को जो शिक्षा दे रहे हैं। वह सब पुरुषों के लिये ईजाद की गई है। और पुरूष के लिये ईजाद की गयी शिक्षा के ढॉचे में स्त्री को भी ढाला जा रहा है। उसके परिणाम घातक हो रहे है।
यूनिवर्सिटी से पढ़ कर जो लड़की निकलती है। उसमें स्त्रेण तत्व थोड़ा अनिवार्य रूपेणः कम होगा। कम हो ही जायेगा, कम हो जाना अनिवार्य है क्योंकि शिक्षा पुरुष के लिये ईजाद की गई है। इसी बात को जरा विस्तार से समझाते हुए आचार्य श्री कहते हैं ''थोड़ा उल्ट करके सोचे तो समझ में आ जायेगी बात। कोई नगर ऐसा हो जहॉ की सारी शिक्षा स्त्रियों के लिये ईजाद की गई हो, संगीत की शिक्षा वहॉ दी जाती हो, नृत्य की शिक्षा दी जाती हो, काव्य की शिक्षा दी जाती हो, भोजन बनाने की, कपड़ा सिलाई की, कमान सजाने की, बच्चों के पालन–पोषण की, यह सब शिक्षा दी जाती हो – किसी नगर में स्त्रियों के लिये शिक्षा दी जाती हो और उस नगर में पुरुष बहुत दिन तक अशिक्षित रखे गये हो। फिर पुरुषों में बगावत होने और वे कहें हमें शिक्षा की जरूरत है।' हम भी शिक्षा लेगें। और स्त्रियां कहे ठीक है हमारे कालेज में आकर तुम भी शिक्षा ले डालों। तो वे पुरुष भी नाचे–गाये, गीत बनाये, कविता करे, घर सजाये, बच्चों के पालन–पोषण की शिक्षा ले तो क्या परिणाम होगा। उस गॉव के पुरुष किसी गहरे अर्थ में स्त्रैण हो जायेगें। उस गॉव के पुरुष में जो पोरूष होगा वह कम हो जायेगा। वह जो पोरूष की तीव्रता है, प्रखरता है वह क्षीण हो जायेगी। वह जो पुरुष के कोने है व्यक्तित्व में, वह गोल हो जायेगें, उनको झाड़ दिया जायेगा।

''मनुष्य की पूरी जाति, पूरा जीवन, पूरी सभ्यता और संस्कृति अधूरी है। क्योंकि नारी ने उस संस्कृति के निर्माण में कोई भी दान, कोई भी कन्ट्रीब्यूशन नहीं किया। चूंकि सारे शास्त्र, सारी सभ्यता, सारी शिक्षा पुरुषों ने निर्मित की है।'' इसलिये यह पुरूषों के व्यक्ति के

अनुरूप है। ''चूंकि पूरी शिक्षा व्यवस्था पुरुषों द्वारा विकसित हुई है। अतः पुरुष गुणों को ही श्रेष्ठ मान लिया गया है। ऐसा होना स्वाभाविक भी था, इसके घातक परिणाम हुए। सबसे घातक परिणाम तो यह हुआ कि स्त्रियों के जो भी गुण थे वे सभ्यता के विकास में सहयोगी न हो सके। सभ्यता अकेले पुरुष ने विकसित की। अकेले पुरुष के हाथ से जो सभ्यता विकसित होगी उसका अन्तिम परिणाम युद्ध के सिवाय कुछ हो ही नहीं सकता। ''अकेले पुरुष के गुणों पर जो जीवन निर्मित होगा वह जीवन हिंसा के अतिरिक्त कहीं नहीं ले जा सकता। पुरुष की प्रवृत्ति में पुरुष के चित्त में ही हिंसा का क्रोध का अनिवार्य हिस्सा है।'' ''मनुष्य की सभ्यता माधुर्य और प्रेम और सौन्दर्य से नहीं भर सकती है क्रूर और पुरुष हो गई, कठोर और हिंसक हो गई।
इसके पीछे दो बातों का हाथ है एक तो स्त्री के गुणों को कोई सम्मान नहीं दिया गया, दूसरा स्त्री ने कभी अपने गुणों को विकसित करने की कोई चेष्टा और कोई सक्रिय उपाय नहीं किया।

पुरुषों ने अपने गुणों को अनिवार्य रूप से स्वीकार कर लिया और स्त्रियों ने भी इस पर स्वीकृति दे दी। यह बहुत आश्चर्य की बात है कि स्त्रियों ने कभी सोचा भी नहीं कि उनके व्यक्तित्व की भी कोई गरिमा, अपना कोई स्थान अपनी कोई प्रतिष्ठा है।..... यह जानकर आपको हैरानी होगी – अगर कोई स्त्री पुरुषों के गुणों में आगे हो जाये तो उसे जोन आफ आर्क या रानी लक्ष्मीबाई ..... और सारे जगत में इस बात की प्रशंसा होती है कि रानी लक्ष्मीबाई बहुत बहादुर, बहुत सम्मान योग्य स्त्री है। लेकिन क्या कभी आपने यह सुना है कि कोई पुरुष स्त्रियों जैसा प्रतीत हो उसका अपमान होगा। अगर कोई स्त्री पुरुषों जैसी प्रतीत हो तो उसका सम्मान होगा चौराहों पर उसकी मूर्तियां खड़ी की जायेगी।

तो वर्तमान शिक्षा के पूरे मापदण्ड पुरुषों द्वारा विकसित हुए है। इनसे पुरूषों के गुणों को, प्रतिस्पर्धा प्रतियोगिताओं को, बहादुरी को, महत्वकाक्षाओं को संघर्ष को बढ़ावा मिलता है। शान्ति को, प्रेम को, दया को, वर्तमान व्यवस्था में कोई प्रोत्साहन नहीं देती।
अब इस बात पर विचार किया जायेगा कि स्त्री शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं समाज शास्त्रीय आधार क्या है।
अब तो जो बाते स्पष्ट हुई है उनसे कुछ ऐसा आभास होता है। जैसे ओशों स्त्री शिक्षा के विरोधी थे। लेकिन ऐसा नहीं है। ओशो का कथन है, ''स्त्री की शिक्षा तो होनी हो चाहिये पुरुषों के बराबर, लेकिन उसके अपने आयाम में, उसकी अपनी दिशा में। उसकी अपनी ही दिशा है। अगर उस दिशा में शिक्षा होगी तो ही सार्थक है।''

वे आगे कहते हैं, जब मैं कहता हूं स्त्रियॉ शिक्षित होनी चाहिये तो मेरा मतलब यह नहीं है कि वे ठीक पुरुषों जैसी, स्त्रियों को गणित में, तर्क में, व्यायाम में, फिजिक्स में, कैमिस्ट्री में, विज्ञान में, ठीक पुरुषों जैसा शिक्षित कर दिया जाये। तो इस सारी शिक्षा में उनके भीतर स्त्रैण तत्व का कोई अनिवार्य हिस्सा मर जाता है।''
इस बात को सैद्धान्तिक पक्ष में इस प्रकार रखते है, ''असल में कुछ चीजों का एग्जिस्टेन्स नहीं होता, कुछ चीजों का सह–अस्तित्व नहीं होता। जैसे अगर कोई आदमी बहुत तर्कनिष्ट हो तो उसके भीतर काव्य का अस्तित्व नही होगा और अगर किसी के भीतर कविता विकसित हो तो उसके भीतर तर्क नहीं रह जायेगा। इन दोनो का सह अस्तित्व नहीं होता। हो ही नहीं सकता'' क्योंकि काव्य के सोचने का ढंग बड़ा तर्क मुक्त है और तर्क के सोचने का ढंग काव्य के बिल्कुल उल्टा है।''
तो स्त्री शिक्षा का स्वरूप कैसा हो ? आचार्य श्री कहते हैं, ''स्त्री को एक और तरह की शिक्षा चाहिये, जो उसे संगीत पूर्ण व्यक्तित्व दे। जो उसे नृत्य पूर्ण व्यक्तित्व दे। जो उसे प्रतीक्षा की अनंत क्षमता दे, जो उसे मौन की चुप होने की, अनाक्रमक होने की, प्रेम और करूणा की गहरी शिक्षा दे।''

उसकी शिक्षा, उनके वस्त्र, उनके चिन्तन, उनकी दीक्षा, उनके विचार, सब भिन्न होने चाहिये, पुरुषों जैसे नही तो हम नारी की शक्ति का मनुष्य की संस्कृति में उपयोग कर सकते है और वह उपयोग अत्यन्त मंगलदायी सिद्ध हो सकता है।
ओशो प्रार्थना भाव में कहते हैं, ''परमात्मा करे कि मनुष्य की इस संस्कृति को पूर्णता दे दे। स्त्री भी अपना दान, अपने प्रेम, अपने आनन्द, अपने काव्य अपने संगीत को जोड़ दे। इस दुनिया में जो अकेले गणित ने, फिजिक्स और कैमिस्ट्री ने खड़ी की है। स्त्री भी जोड़ दे अपनी प्रार्थना को उस राजनीति में जो अकेले पुरुषों ने केवल महत्वाकांक्षा के आधार पर खड़ी की है। स्त्री भी जोड़ दे अपनी थोड़ी सी पंक्तियों को उस गीत में जो पुरुष अब तक अपने क्रोध और युद्ध के आवेश में अकेला ही गाता रहा है तो शायद एक ज्यादा सर्वांगीण, ज्यादा इन्टीग्रेटिड, ज्यादा आखण्ड सभ्यता का जन्म हो सकता है और अगर वह सभ्यता नहीं जन्मी तो यह सभ्यता मरने के करीब है। सारांश – ये कि, ओशो स्त्रियों की शिक्षा के प्रबल समर्थक है लेकिन वे महिलाओं को ठीक पुरुषों की तरह दीक्षित करने के सख्त खिलाफ है।

निष्कर्ष

ओशा के अनुसार स्त्रियों का व्यक्तित्व पुरुषों से एकदम अलग है। स्त्रियों के व्यक्तित्व में प्रेम का, दया का, सौन्दर्य का, अनुपात पुरुषों की अपेक्षा कही ज्यादा है। अतः स्त्रियों के लिये ऐसी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये जिससे एक स्त्री, एक परिपूर्ण स्त्री के रूप में विकसित हो, पुरुष की कार्बन कापी या एक नकली पुरुष के रूप में नहीं। ओशो चेतावनी के लहजे में कहते हैं, 'मनुष्य ने बहुत दुर्भाग्य जाने है लेकिन अगर सारी स्त्रियां पुरुषों जैसी हो जाये तो इससे बड़ा दुर्भाग्य नहीं हो सकता। जीवन का सारा आनन्द और जीवना का सारा आकृष्ण नष्ट होगा और जीवन मरेगा विषाद से और पीड़ा से। और विषाद, और पीड़ा में सिवाय आत्मघात के कोई विकल्प नहीं रह जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. शिक्षा : नये प्रयोग–ओशो
2. शिक्षा में क्रान्ति–ओशो
3. शिक्षा और जागरण–ओशो
4. शिक्षा और विद्रोह–ओशो
5. पातज्जलि योग सूत्र–ओशो
6. प्रेम जादू है (आडियो, कैसेट)–ओशो
7. शिक्षा अनुसंधान–आर0ए0 शर्मा
8. शिक्षा दर्शन–श्रीमति संध्य मुखर्जी
9. ओशो टाइम्स (पत्रिका)–दिसम्बर (2001)
10. ओशो टाइम्स (पत्रिका)–दिसम्बर (1994)